REVIEW OF RESEARCH

भारत में आतंकवादी गतिविधियों की पृष्ठभूमि एक ऐतिहासिक अध्ययन

Pranav Mishra

PhD Research scholar , Dept. Of Mass-communication , M.G.A.H.V, Wardha.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

प्रस्तावना :–

आतंकवाद शब्द का तात्पर्य भय और चिंता से है इसका उद्देश्य जनता के बीच में हिंसा फैलाकर शक्ति को प्रदर्शित करना। आज के समय में यह समस्या विश्व के लिए चुनौती है। विश्व के सामने 'व्यापी समस्या' बन के खड़ा हो गया है। इसके समाधान के लिए प्रत्येक देश में आतंकवाद से निपटने के लिए अन्वेषक अन्वेषण कर रहे हैं। लेकिन अभी तक कोई ऐसा सार्थक विचार नहीं आ पाया है। जो दुनिया के लिए मिसाल हो और एक मानक हो, जिसे दुनिया में लागू किया जाए।

हाल के दिनों में जिस तरह से न्यूजीलैंड के मस्जिद में सैकड़ों जानें गई। हिंदुस्तान के पुलवामा में44 जवान मारे गए और श्री लंका के चर्च में बम धमाका हुआ। यह तमाम घटनाएं दुनिया में इंसानी जात को शर्मसार करती है। ऐसी घटना से देश की जड़े तो हिलती ही है साथ ही सरकार को तंत्र में होने के नाते इंसानसे सख्ती से पेश आना पड़ता है।

भारत में जिस तरह से कश्मीर में आतंकी घटना हुई वैसे कश्मीर के तंत्र पर प्रश्न उठती है। इससे सत्ताधारी सरकार सकते में आती जाती है साथ और कड़ी कारवाई के लिए सरकार को निर्णायक कदम उठाने पड़ते हैं। इससे देश की राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, आदि परिस्थितियां प्रभावित होती हैं।

आतंकवादी के धर्म की बुनियाद धर्मांधों पर खड़ी है और आतंकवादी छोटे स्वार्थ के कारण हत्याएँ कर रहे हैं। यह लोकतन्त्र को कमजोर बना रहे हैं। आजादी के बाद से ही हर राज्य में आतंकी घटनाएं हो रही है जैसे तमिलनाडु, उत्तराखण्ड, बिहार, पश्चिम बंगाल, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, असम, आंध्र प्रदेश आदि। आतंकवाद की समाप्ति के लिए अभी तक कोई सुनिश्चित विकल्प निकल नहीं सका है। समाज में असुरक्षा का भय पैदा हुआ है। ले दे कर यह एक तरह से तंत्र को कमजोर करने का कार्य किया है। आज के युग में यह सोचने की जरूरत है किन कारणों से आतंकवाद पैदा हो रहा है?

भारत में इससे निपटने के लिए कानूनी तंत्र को कठोर किया जा रहा है। कानूनी व्यवस्था को सख्त किया जा रहा है। सबके लिए एक नियम हो। जिससे कोई निर्मम घटनाएं नहीं हो आज हमें सोचने की जरूरत है। भारत में जिस तरह से आतंकी घटनाएँ बढ़ रही है जैसे : दिनांक 3 नवंबर, 1999 को श्रीनगर में बादाम बाग में आतंकवादी हमले हुए थे। जिसमें 10 जवान हताहत हो गए थे, जम्मू कश्मीर विधानसभा पर 1 अक्टूबर 2001 को आतंकियों ने बम से हमला किया, जिसमें 38 लोग मारे गए। इस घटना में 3 आत्मघाती हमलावरों ने हमला बोला था। इस घटना की ज़िम्मेदारी जैश ए मोहम्मद ने ली थी।14 मई, 2002 को जम्मू कश्मीर के कालूचक में हुए हमले में 21 जवान हताहत हो गए साथ 36 आम लोगों की मौत हो गई। इस हमले में 20 सैनिक हताहत हुए। 22 जुलाई, 2003 को जम्मू कश्मीर के अखनूर में हुए आतंकी हमले में 8 सुरक्षाकर्मी हताहत हो गए, 5 अक्टूबर 2006 श्रीनगर में हुए हमले 7 सुरक्षाकर्मी हताहत हो गए, जम्मू-कश्मीर के उड़ी सेक्टर में सेना के कैंप पर हुए भीषण आतंकवादी घटना ने पूरे तंत्र को हिला के रख दिया। इस प्रकार इस घटना से रक्षा मंत्रालय के नींद उड़ गई और सरकार की नजर और सख्त हो गयी। इस घटना से देश की आर्थिक क्षति तो होती ही है साथ

कई लोगों के घर उजड़ जाते हैं। आतंकवादी घटना होने से राजनीति में वैचारिक टकराव होने लगते हैं और टीवी और मीडिया के पन्नों में सियासी माहौल गरमाने लगता है। राजनीतिक पार्टीयां तंत्र पर हमला करने लगती है और सत्ता में काबिज होने के लिए अपने विचार थोपने का कार्य करती है। मीडिया घरनों मे आतंकवाद को हॉट केक माना जाता है जब भी कोई घटना होती है तो मीडिया उस के गहराई मे जाने के बजाए उसे एक ताजातरीन व्यंजन की तरह परोसता है। किसी भी घटना को सरसरी तौर पर देखने की वजह से ही जो मुख्य जानकारी है वह दर्शक या पाठक तक नहीं पहुँच पाती है जो और असमंजस का वातावरण बनता है।

मुंबई सीरियल ब्लास्ट हमला 12 मार्च 1993 को आतंकी हमला हुआ। इस हमले में में 257 लोग मारे गए और इस हमले में 713 लोग घायल हुए थे। सरकार ने इन हमलो के पीछे दाऊद इब्राहिम का हाथ होने का खुलासा किया है। इस हमले ने मुंबई समाज में तनाव तो पैदा किया ही साथ आपसी सद्भाव को भी दूर करने का कार्य किया। इसके बाद में मुंबई के ट्रेन में आतंकियों ने बम धमाका किया। यह 11 जुलाई 2006 को मुंबई के लोकल ट्रेनों में अलग-अलग जगहों पर किया गया। जिसमें 7 बम विस्फोट हुए। इसमें हमले की जिम्मेदारी इंडियन मुजाहिदीन ने लिया था। इस धमके में कुल 210 लोग मारे गए थे और 715 लोग जख्मी हुए। इस प्रकार से एक और घटना का जिक्र आता है। महाराष्ट्र के मालेगांव में 8 सितंबर, 2006 को हुए तीन धमाकों में 32 लोग मारे गए और सौ से अधिक घायल हुए थे। इस प्रकार से 26/11 मुंबई में आतंकी हमला हुआ जिसमें 180 लोग मारे गए और 300 लोग घायल हुए। यह घटना पाकिस्तान से आए दस आत्मघाती हमलावरों ने की थी। यह घटना दिनांक 26 नवंबर 2008 को हुई थी। आतंकियों ने नरीमन हाउस, होटल ताज और होटल ओबेराय को अपने कब्जे में ले लिया था। इस हमले मे एक आतंकी आमिर अजमल कसाब जिंदा पकड़ा गया था, जिसे भारत के कानून के अनुरूप मुकदमा चलाकर मृत्यु दंड दिया। इस तरह से पुणे की जर्मन बेकरी में 10 फरवरी, 2010 को हुए बम धमाके में नौ लोग मारे गए और 45 घायल हुए थे।

13 दिसंबर 2001 को भारत के संसद पर हमला, लश्करे तैयबा और जैश मोहम्मद के 5 आतंकियों ने भारत पर हमला किया था। आतंकियों ने संसद भवन के परिसर में घुस गए और हमला किया था। सुरक्षा बलों ने आतंकियों को मार गिराया और आतंकी अपने मंसूबे में नाकाम हो गए थे। इस हमले के समय संसद भवन में 100 राजनेता मौजूद थे। इस हमले में 6 पुलिसकर्मी और 3 संसद भवन कर्मी मारे गए थे।

दिल्ली सीरियल बम ब्लास्ट दिनांक 29 अक्टूबर 2005 को दीवाली से 2 दिन पहले आतंकियों ने 3 बम धमाके किए जिसमें प्रथम सरोजनी नगर और दूसरा पहाड़गंज के मुख्य बाजारों में किया और तीसरा धमाका गोविंदपुरी में एक बस में हुआ। इसमें कुल 63 लोग मारे गए जबकि 210 लोग घायल हुए थे।

राज्य उत्तर प्रदेश में 1 जनवरी, 2008 को रामपुर में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कैंप पर आतंकी घटनाएँ हुई थी जिसमें 10 लोगों की मौत हुई थी और 5 लोग घायल हुए थे। भारत-पाकिस्तान के बीच चलने वाली समझौता एक्सप्रेस में दिनांक: 19 फरवरी, 2007 को आतंकी घटनाएँ हुई थी जिसमें 66 यात्री मारे गए थे और दर्जनों की संख्या में घ्याल हुए थे एक प्रकार से देखा जाए तो आतंकी घटनाएँ लगातार बढ़ती जा रही। स्थिति यह हो गयी है कि इसकी जड़े और मजबूती से बढ़टी जा रही है। इससे इंसानी जीवन को तो खतरा तो है ही इसके आलवा सरकार को भी लगातार अव्यवस्था का शिकार होना पड़ता है।

दिनांक 24 सितंबर 2002 को अक्षरधाम मंदिर पर हमला किया गया था जिसमें लश्कर और जैश ए मोहम्मद के 2 आतंकी मारे गए थे। यह घटना दोपहर 3 बजे अक्षरधाम मंदिर में हुई थी। इस हमले में 31 लोग मारे गए थे और 80 लोग घायल हो गए थे। जिससे मंदिर में लोगों को आने में भी सहमना पड़ता है। आतंकी घटनाओं को ध्यान में रखकर देखा जाए तो इस जाति का इंसानी से कोई लेना देना नहीं है बल्कि इनके कर्म में हिंसा है। इसका प्रमुख कारण है कि कुछ असामाजिक तत्त्व है। उनका कार्य है कि धर्म, जाति, भाषा एवं भोगोलिक स्थिति के नाम पर देश या समाज को बाटा जाए और शांति को भंग कर अपने मकसद मे कामयाब हों। देश भर में इस तरह कि हिंसाएँ लगातार घट रही है।

18 मई, 2007 हैदराबाद में मक्का मस्जिद में बम धमाका किया गया था जिसमें 13 लोगों की मौत हो हुई थी और कई अन्य लोग घायल हुए थे। इस तरह से बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर बम धमाका आतंकियों ने किया था जिसमें 15 लोगों की मौत हुई थी और कई अन्य लोग घायल हुए थे। गुजरात के अहमदाबाद में दिनांक: 26 जुलाई, 2008 को 20 बम विस्फोट किया गया था जिसमें 50 से अधिक लोग मारे गए थे और कई अन्य लोग घायल हुए थे। राजस्थान के गुलाबी नगरी जयपुर में 13 मई 2008 में 15 मिनट के अंदर 9 बम धमाके हुए। इन धमाकों में कुल 63 लोग मारे गए थे जबकि 210 लोग घायल हुए थे। इस तरह से हर राज्य में आतंकी घटनाएँ लगातार बढ़ रही है।

इससे लोगों में असंतुलना का भाव बढ़ता जा रहा है साथ ही लोगों में कई तरह के अविश्वास का भाव समाज में उत्पन्न होता है। उत्तर भारत के असम राज्य में गुवाहाटी दिनांक: 30 अक्टूबर 2008 को विभिन्न जगहों पर कुल 18 धमाके आतंकियों ने किए थे जिसमें 81 लोग मारे गए थे और 470 लोग घायल हुए। इन धमाकों के कारण पूरे राज्य में भय का कारण बना।

- **शोध प्रविधि(Research methodology):** प्रस्तुत शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।शोध में विश्लेषण हेतु अंतर्वस्तु विश्लेषण एवं ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया हैशोध में उपयुक्तप्रविधि इस प्रकार है-
- अंतर्वस्तु विश्लेषण
- ऐतिहासिक

• निष्कर्ष:

1. आतंकवाद का एक मात्र मकसद आम नागरिकों को निशाना बना कर सरकारों को दबाव मे लाना है, जिससे आतंकवादी संगठन अपने मकसद मे कामयाब हो सकें।
2. आतंकवादी अपने शिकार या घटना के स्थल का चुनाव प्रमुख सांकेतिक स्थलों के रूप मे करते हैंजिससे लोगों मे ज्यादा भाय व्याप्त हो की इन जगहों पर भी वो सुरक्षित नहीं हैं।
3. आतंकी घटनाओं का असर सिर्फ आर्थिक ही नहीं होता है मानसिक, धार्मिक सोहार्द और सामाजिक संरचना पर भी होता है।
4. आतंकवाद से निपटने के लिए कोई ठोस कार्य पद्धति मौजूद नहीं है।
5. आतंकवाद के गिरफ्त में भारत के सभी क्षेत्र आ गए हैं ।
6. आतंकवाद से निपटने के में मीडिया का प्रभावी योगदान कम है।

• सुझाव :

आतंकवाद से निपटने के लिए त्रिस्तरीय कार्य पद्धति का प्रयोग करना होगा, प्रथम सरकारी तंत्र को बल का प्रयोग कर आतंकी संगठनों का सफाया, दूसरा प्रभावित क्षेत्र की आम जनता के आर्थिक पक्ष को मजबूत करने हेतु विकास एवं व्यापार को बढ़ावा देना होगा, तीसरा एवं सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु सामाजिक स्तर पर आम नागरिकों और युवाओं में शिक्षा का स्तर बढ़ाना तथा धार्मिक स्थानों में सेहतपूर्ण संवाद को स्थापित करना।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- "Terrorism". The American Heritage Dictionary of the English Language (4th ed.). Bartleby.com. 2000. Archived from the original on 20 June 2006. Retrieved 11 August 2006.
- "800 Terror Cells Active in Country". The Times of India. 12 August 2008.
- National Consortium for the Study of Terrorism and Responses to Terrorism.(2018). Global Terrorism Database (globalterrorismdb_0718dist.xlsx).
  Retrieved from https://www.start.umd.edu/gtd University of Maryland
- Left Wing Extremist (LWE) Data SATP (2010)
- Sharma (2013), Growing overlap between terrorism and organized crime in India: A case study, Security Journal, 26(1), 60-79
- John Philip Jenkins (ed.). "Terrorism". Encyclopædia Britannica. Archived from the original on 17 December 2007. Retrieved 11 August 2006.
- Warren Kozak, Remembering the Terror in Mumbai The Wall Street Journal (26 November 2011)

- Terrorism-related Incidents in Maharashtra since 2006 South Asia Terrorism Portal (SATP) (2014)
- Jewish Center Is Stormed, and 6 Hostages Die The New York Times (28 November 2008)
- "Narendra Modi tears into Nitish Kumar at Hunkaar Rally". oneindia.com. Retrieved 28 December 2014.
- "Five killed, 20 injured in serial blasts in Patna before Narendra Modi's election rally". NDTV.com. Retrieved 28 December 2014.
- Blasts at Indian Buddhist shrines of Bodh Gaya in Bihar BBC News (7 July 2013)

LBP PUBLICATION